
आदर्श प्रश्न- पत्र - 2

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'अ'

कक्षा - नवमी

निर्धारित समय: 3 घण्टे

अधिकतम अंक: 90

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं -
खंड क- 20 अंक
खंड ख- 15 अंक
खंड ग - 35 अंक
खंड घ - 20 अंक
 2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
-

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. (क) (iii) उसका पारिवारिक धंधा
(ख) (i) व्यक्ति अपनी जाति बदल सकता था
(ग) (ii) तत्कालीन भारतीय समाज जाति-पाँति में बटा हुआ था
(घ) (iii) योद्धा की शिक्षा लेकर
(ङ) (ii) प्राचीन जाति व्यवस्था
 2. (क) (iii) उपयुक्त दोनों
(ख) (ii) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् का
(ग) (iii) शिक्षाविद् प्रो० यशपाल
(घ) (i) लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा
(ङ) (iv) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति
 3. (क) (iv) उपर्युक्त सभी
(ख) (iv) सभी को एक साथ समान भाव से गोद में सुलाना
(ग) (i) खेती करने का
(घ) (i) विरोध भूलकर प्रेमभाव से रहना
(ङ) (iii) गोत्र
 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नों के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।
(क) (iii) प्रश्नात्मक
(ख) (iv) शेरनी
-

-
- (ग) (i) आँसू बहाती है
(घ) (i) योग्य
(ङ) (iv) गीता

खण्ड - ख
(व्याकरण)

5. (क) आहार |
(ख) संप्रदाय |
(ग) प्रसन्न |
(घ) अपना |
6. (क) तीन रंगों का समाहार |
(ख) कमल के समान नयन |
(ग) दस है आनन जिसके अर्थात् रावण |
(घ) धर्म और अधर्म |
7. (क) आज्ञावाचक |
(ख) प्रश्नवाचक |
(ग) विधानवाचक |
8. (क) उत्प्रेक्षा
(ख) अतिशयोक्ति
(ग) अतिशयोक्ति
(घ) मानवीकरण

खण्ड - ग
(पाठ्य-पुस्तक)

9. (क) दूसरे दिन झूरी का सालापुनः बैलों को ले जाने के लिए आया | घर पहुँच कर झूरी के साले ने बैलों को मोटी रस्सियों से बांध दिया, उन्हें शरारत करने का मजा चखाया और सूखा भूसा खाने को दिया |
(ख) गद्यांश में हीरा को अधिक सहनशील बताया गया है | क्योंकि वह भूखे रहकर, मार खाकर भी मालिक का कम से कम नुकसान करना चाहता था |
(ग) 'टिटकार' का अभिप्राय है मानव मुख से निःसृत टिक-टिक का शब्द |
10. (क) दो बैलों की कथा का कथा विन्यास प्रेमचंद ने इस तरह किया है कि दोनों बैलों की गहरी दोस्ती पग-पग पर उजागर होती है चाहे वह हल में जोते जाने पर दोनों द्वारा ज्यादा से ज्यादा भार अपने कंधों पर रखने की कोशिश हो या गया द्वारा हीरा की पिटाई पर मोती द्वारा हल लेकर भागना हो | साँड के साथ संगठित युद्ध हो या खेत में मटर खाते मोती के पकड़े जाने पर हीरा का भी वहाँ आ जाना हो अथवा कांजीहौस की दीवार
-

गिराने के प्रयास में हीरा को मजबूत बंधन में बंधे छोड़ मोती को जाने की स्वतंत्रता के बावजूद वहाँ से नहीं जाना | ये सभी घटनाएँ उनकी गहरी मित्रता की कहानी कहते हैं |

(ख) शेकर विहार में सुमति गंडा बाँटना चाहता था जिसमें अधिक समय लगने की संभावना थी और लेखक को लक्ष्य तक पहुँचने की जल्दी थी | अतः उन्होंने उसे अपने यजमानों के पास जाने से रोका परंतु दूसरी बार लेखक को शेकर विहार के एक अत्यंत रमणीय मंदिर में पुस्तकों का खजाना मिल गया जिसे पढ़ने एवं समझने के लिए लेखक को स्वयं समय की जरूरत थी | वे किताबों में इतने रम गए कि उन्हें अब किसी चीज की कोई आवश्यकता नहीं थी | अतः उन्होंने सुमति को रोकने के प्रयास नहीं किया |

(ग) लोगो को लुभाने के लिए उपभोक्तावाद की संस्कृति में उत्पादों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ाई जा रही है। विज्ञापन के द्वारा लोगो ने उनके फायदों तथा खूबियों को प्रचारित किया जा रहा है। विशिष्ट व्यक्तियों के साथ उत्पादों को जोड़कर लोगो को उत्पादों की तरफ आकर्षित किया जा रहा है।

(घ) बैलों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह इसलिए झलक रहा था क्योंकि वह झूरी के ससुराल से विद्रोह कर वापस अपने घर अर्थात् झूरी के घर आ गए थे | झूरी के ससुराल में जो कष्ट एवं अपमान उन्हें झेलना पड़ा उसे वे मूक जीव अपने प्यारे मालिक को बताना चाहते थे |

(ङ) नम्से तिब्बत में बौद्ध भिक्षु थे | वे जागीर में खेती की देखभाल करते थे | उन्हें समाज में अत्यंत सम्माननीय स्थान प्राप्त था | वे बहुत अच्छे और नम्र इंसान थे | अहंकार का उनमें नामोनिशान नहीं था | वे भिखमंगे स्वरूप में भी लेखक से आत्मीयता से मिले और उन्हें सम्मान से अपने यहाँ स्थान दिया | जो यह सिद्ध करता है कि वे अत्यंत दयालु व आतिथ्य भावना से परिपूर्ण इंसान थे |

11.(क) कवयित्री ने उपर्युक्त काव्यांश में अपने आराध्य प्रभु को शिव कहा है। उन्होंने उनका वास कण-कण में होने की बात कही है।

(ख) कवयित्री उपर्युक्त काव्यांश के माध्यम से संसार को हिन्दू-मुसलमान के बीच भेदभाव को त्यागने का संदेश देते हुए कहती है कि ईश्वर सर्वव्याप्त है। हे मनुष्य ! तुम धार्मिक भेदभाव को त्यागकर उसे अपना लो। ईश्वर जानने से पहले तुम स्वयं को पहचानो अर्थात् आत्मज्ञान प्राप्त करो।

(ग) कवयित्री के अनुसार ईश्वर सर्वव्याप्त है। वह किसी मानव निर्मित सीमा बँधा नहीं है। उसका वास स्वयं मनुष्य के हृदय में भी है। अतः मनुष्य स्वयं को जान लेगा तो वह ईश्वर को पा लेगा।

12.(क) संसार के वे लोग जो अकारण किसी की निंदा करते रहते हैं उन्हें कबीर ने स्वान (कुत्ता) कहकर संबोधित किया है। जिस तरह अपने मार्ग पर आगे बढ़ते हाथी को देखकर कुत्ता बिना कारण भौंकना शुरू कर देता है और हाथी उसे बिना देखे आगे बढ़ता रहता है। ठीक उसी प्रकार प्रभु भक्ति में लीन लोगो को देखकर संसार के लोग उन्हें मार्ग से विरत करने के लिए उनकी निंदा शुरू कर देते हैं। उनकी इसी प्रवृत्ति के कारण कबीर ने अपने पद में इन्हें स्वान कहा है।

(ख) कवयित्री ललदयद ने प्रभु प्राप्ति में बाधक अनेक कारण अपनी कविता में गिनाए हैं - उनके अनुसार सांसारिक भोग-विलास, आडंबरपूर्ण भक्ति, भेदभाव, सांप्रदायिक भावना, नश्वर तथा क्षणभंगुर मानव शरीर, अज्ञानता इत्यादि वे तत्त्व हैं जो मनुष्य को ईश्वर तक नहीं पहुँचने देते।

(ग) कवि रसखान कृष्ण भक्त हैं जो कृष्ण से जुड़ी प्रत्येक वस्तु से अगाध प्रेम करते हैं, अतः जिस लकुटी और कामरिया को श्रीकृष्ण का स्पर्श प्राप्त हो उस पर रसखान क्यों न फिदा हो। वे उस लकुटी और

कामरिया पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है क्योंकि उनके लिए श्रीकृष्ण की प्रत्येक वस्तु अनमोल है।

(घ) कवी को कोयल से ईर्ष्या इसलिए हो रही है क्योंकि कोयल स्वतंत्र है और कहीं भी विचरण कर सकती है कवि परतंत्र है तथा जेल में बंद है। कोयल आना बसेरा पेड़ की हरी-भरी टहनियों के बीच बसाए हुए है जबकि कवि जेल की काल कोठरी में बंद है। कोयल के मधुर गान को सुनकर लोग प्रफुल्लित होते हैं जबकि कवि का गान तत्कालीन परिस्थितियों में लोग सुनना भी गुनाह मानते हैं।

(ङ) ग्राम श्री कविता में कवि ने अरहर और सनई का वर्णन करते हुए लिखा है कि इनमें जब फलियाँ आती हैं और फसल तैयार हो जाती है तब हवा चलने पर उनमें से हल्की मधुर आवाज आती है जिसे सुनकर कवि को लगता है जैसे धरती ने अपनी कमर पर करघनी बाँध रखी हो। कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि सनई और अरहर के खेत धरती की कमर में बँधी किंकिणियाँ हो।

13. मुसहर अत्यंत गरीब होते हैं, जो अपनी जीविका देने, पत्तल बनाकर चलाते हैं, पर वे बहुत जिंदादिल होते हैं। इसका प्रमाण लेखक उस घटना जो बनाता है जब लेखक परमान नदी की बाढ़ में डूबे मुसहरों की बस्ती में राहत सामग्री बाँटने गया। लेखक वहाँ का दृश्य देखकर आश्चर्य से भर गया क्योंकि बाढ़ जैसी विभीषिका में भी वे ढोल-मंजीरे के साथ एक ऊँची जगह पर बलवाही नाच कर रहे थे। एक नट रूठी दुल्हन का अभिनय कर रहा था और दूसरा नट उसका पति बन उसे मना रहा था। ढोल-मंजीरे की गूँजती तालों के बीच भूख-प्यास से व्याकुल नर-नारियों की मुक्त हँसी से लेखक ने यह जान लिया कि उसके द्वारा बाँटी जाने वाली राहत सामग्री उन्हें उतनी खुशी नहीं दे सकेगी। लेखक ने सुन रखा था कि ये लोग मछली और चूहों के सहारे स्वयं को जीवित रखते हैं।

खण्ड-घ

('लेखन')

14. "प्राकृतिक आपदाएँ"

आज पृथ्वी में अनेक तरह की प्राकृतिक आपदाओं से हर साल जान-माल का बहुत भारी नुकसान होता है। ये आपदाएँ अचानक आकर कुछ पलों में सब कुछ स्वाहा कर देती हैं। मनुष्य जब तक कुछ समझ पाता है, तब तक यह आपदा उसका सब कुछ तबाह कर चुकी होती है। इन आपदाओं से बचने के लिए ना ही उसके पास कोई कारगर उपाय हैं और न ही कोई कारगर यंत्र। इस आपदाओं में भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी, बाढ़, भयंकर तूफान इत्यादि शामिल हैं। इनका संबंध प्रकृति से है। पृथ्वी की परतों के बीच अचानक हुए घर्षण के कारण उत्पन्न ऊर्जा से भूकंप आता है। ज्वालामुखियों में हो रही गतिविधियाँ भी भूकंप का कारण हो सकती हैं। भूकंप में धरती फट जाती है व तीव्र झटके लगते हैं। इससे लहरें विशाल व भयानक रूप धारण कर भयंकर तबाही ला सकती हैं। भूकंप से भूखलन व हिमखलन भी होता है। इसकी तरंगों के क्षेत्र में जो भी स्थान आता है, वहाँ भयंकर स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वर्षा की तीव्रता के कारण भयंकर बाढ़ आती है और आबादी का एक बड़ा क्षेत्र इससे प्रभावित हो जाता है। मनुष्य कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो गया हो परन्तु प्रकृति के आगे बेबस हो नकारा सिद्ध हो जाता है। हमें प्रकृति का दोहन रोक देना चाहिए। प्रकृति के साथ हमारी छेड़छाड़ ने ही उसको भयानक बना दिया है। इसलिए हमें पेड़ लगाने चाहिए। पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण को रोकने के लिए कार्य तेज़ कर देने चाहिए। आपदा प्रबंधन के माध्यम से भयानक खतरों की पहचान करनी चाहिए। इससे आने

वाली तबाही से बचा जा सकता है और खतरों तथा उससे होने वाले नुकसान का समय रहते आकलन लगाया जा सकता है।

15. प्रति,

प्रधानाचार्य,

राजकीय माध्यमिक विद्यालय,

उज्जैन

विषय- फीस में छूट हेतु।

मान्यवर,

निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी पिछले वर्ष लोक संपर्क विभाग से चौकीदारी पड़ से अवकाश मुक्त हो गए हैं। उनकी पेंशन बहुत मामूली है जबकि अभी परिवार का सारा बोझ उन पर है। मेरे अतिरिक्त, मेरे दो भाई और एक बहन भी पढ़ते हैं। हमारी फीस में पिता जी की पेंशन का अधिकांश भाग निकल जाता है। मैं हर वर्ष कक्षा में प्रथम आता हूँ। मैं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता हूँ। मेरे व्यवहार से सभी अध्यापक सन्तुष्ट हैं। अतः कृपा करके मेरी फीस माफ करने का कष्ट करे ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

कर्म

कक्षा नौ

16.

“बाढ़ की विभीषिका”

पिछले कुछ दिनों से राजधानी में तेज वर्षा और कई दिनों की झड़ी का कारण साड़ी व्यवस्थाएँ चरमरा गई हैं। दिल्ली के गाँवों में भयंकर वर्षा हुई, जिसके कारण भरतल नाला भर गया और निकटवर्ती गाँवों में पानी का खतरा बढ़ गया। कुछ किसानों ने खेतों को बचाने के लिए नाले का बाँध काट दिया। परन्तु इसके कटने से लगभग आधी दिल्ली बाढ़ की चपेट में आ गई।

हमने देखा कि पंजाबी बाग, रत्नपार्क, बालीनागर, जे. जे. कॉलोनी और तिलक नगर के ढलान वाले स्थानों में मकानों के अंदर पानी प्रविष्ट हो चुका था। वहाँ लोग साइकिलों पर, बगल में और किराए के घोड़ों पर सामान लादकर सुरक्षित स्थानों की ओर जा रहे हैं। नजफगढ़ क्षेत्र में स्थान-स्थान पर पानी भर गया था। मकानों में, दुकानों में तीन-तीन फुट गहरा पानी भरा हुआ था। कई बाजारों में पानी भरकर शान खड़ा था। और सब प्रकार की गंदगी आने के कारण चारों ओर दुर्गंध फैल रही थी। पानी के बहाव ने नजफगढ़ के बाहरी क्षेत्र को बुरी तरह ग्रस्त लिया था। लगभग 500 मकान पूरी तरह नष्ट हो चुके थे। कई सौ मकान पानी में डूब गए थे। नजफगढ़ सड़क कई स्थानों पर जलमग्न थी। कई हजार लोग बेकार हो गए थे। सरकार की ओर से बाढ़ पीड़ितों की सहायता का काम शुरू हुआ, पर इसमें विलम्ब हो चुका था। सरकार ने इस पर काबू पाने के भरसक प्रयास किए, फिर भी एक मास तक इसका प्रकोप बना रहा।
